पेरिस
अगस्त ३१, २००६

सन्देश संख्या १०४

संवेदनशीलता एवं पुनर्जीवन बनाम् भावुकता एवं परिमार्जन

संवेदनशीलता पूर्णता, समग्रता एवं विभाजनहीनता की अवस्था है जबकि भावुकता वियोजन और विभाजन की ओर ले जाने वाली अपूर्णता है । संवेदनशीलता में नवजीवन एवं पुनर्जीवन है जबकि भावुकता में, भ्रामक एवं मिथ्या ''मैं'' अपने अन्तहीन भावनात्मक विचारों एवं प्रक्षेपणों में केवल कृत्रिम परिमार्जन के साथ अपने पूर्व रूप में ही बना रहता है । भावनाओं का प्रतिक्षण मरना ही संवेदनशीलता है और इस तरह यह प्रतिक्षण स्वतंत्रता के आनन्दमय अस्तित्व में होना है जबकि भावुकता विभाजन और भ्रांति है जो लालसाओं और सीमित शरीरी चित्तवृत्ति के जाल में फँसाव की ओर ले जाती है । संवेदनशीलता थोड़ी–थोड़ी कर जमा नहीं होती और न कभी कृत्रिम होती है । यह भावुकता या कल्पना की अवस्था भी नहीं है । केवल संवेदनशील व्यक्ति ही निष्कर्षों एवं शब्दाडम्बरों, मतों एवं मताग्रहों तथा मान्यताओं एवं आरोपणों में फँसे बिना यथार्थ के प्रति सजग बना रह सकता है । यह संवेदनशीलता देखने एवं समझने की सरलता है । यह मूर्खतापूर्ण माँगों एवं इच्छाओं की समाप्ति है । यह समस्त भावनाओं एवं उनके कल्पित–सुख से मुक्ति की अवस्था है । परिमार्जन तथा उसका प्रस्तुतीकरण और उसके लिए प्रयास बहुत सुख देता है । परिमार्जन के तरीके अनन्त हैं किन्तु सभी द्वन्द्वों एवं विरोधाभासों से युक्त हैं । जो परिमार्जन के लिए प्रयासरत है वह उसके लिए अपने गहरे अनुबन्धनों के कारण बाध्य होता है तथा यह परिमार्जन उसे आत्म–केन्द्रित गतिविधि और वियोग की ओर ले जाता है जो अन्ततः अत्यधिक अहंकार को जन्म देता है । भावुकता और उसका परिमार्जन केवल आत्म–केन्द्रित प्रकिया है, भले ही सामाजिक मानसिकता और नैतिकता उसका कितना भी महिमामण्डन क्यों न करे । इस परिमार्जन प्रक्रिया में तुष्टि तो मिलती है किन्तु आनन्द की गहराई नहीं। यह सचमुच बहुत सतही है । भावुकता मन है जबकि संवेदनशीलता जीवन है जिसका कोई अन्त नहीं । साधुता एवं पवित्रता के नाम पर किया गया दमन अपवित्र संवेदनहीनता और पाशविक मतिमन्दता है किन्तु दुर्भाग्य से उसे तथाकथित नैतिक परम्पराओं द्वारा उच्च कोटि का त्याग माना जाता है । चित्तवृत्ति को और अधिक जड़ एवं मन्द बनाने के लिए आदर्शों एवं निष्कर्षों का आविष्कार किया जाता है और उनका सर्वत्र प्रचार किया जाता है । सभी प्रकार की भावुकता चाहे वह कितनी भी परिमार्जित क्यों न हो, अन्ततः प्रतिरोध एवं विनाश को उपलब्ध होती है ।

संवेदनशीलता तभी पुष्पित होती है जब व्यक्ति सभी प्रकार की भावनाओं से मुक्त हो जाता है । पूर्णरूपेण संवेदनशील होने का अर्थ है–भावनात्मक स्मृति का कोई भी चिह्न न होना क्योंकि उसका प्रत्येक चिह्न संवेदनशीलता को न करता है । भावनात्मक स्मृति के चिह्नों से मुक्त होना तथा उन्हें कभी भी बनने नहीं देना, निर्विकल्प रूप से प्रतिक्षण संवेदनशील होना है । भावनात्मक चिह्नों के रूप में मानसिक अवशेषों एवं अवसादों का संचय भयानक मतिमन्दता और विकृतियाँ लाता है और तब संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है ।

भावुकता दुःख की सीमा के अन्दर रहना है जबकि संवेदनशीलता दुःख के कारणों को समझकर उससे परे चला जाना है । दुःख के कारणों के ऊपर प्रश्न करना और उन्हें समझना मन्दिर, मस्जिद, यहूदी प्रार्थना भवन या चर्च जाने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि पूजा स्थान दुःख के कारणों को बनाये रखते हैं । संवेदनशील प्रश्न मानसिक कारागार को ध्वस्त कर देते हैं जबकि भावनात्मक परिमार्जन नए एवं महँगे कारागारों का निर्माण करता है जो देवताओं, उद्धारकों, अर्थशास्त्रियों और नेताओं की छवियों से सुसज्जित होता है । संवेदनशील एवं विद्रोही सजगता से युक्त प्रश्न विचारों को उत्पन्न करने वाला यन्त्र अर्थात मन को न कर देता है और फिर दूसरे विचारों, निष्कर्षों एवं सिद्धान्तों का जन्म नहीं होता । ऐसे प्रश्नों से तथाकथित सत्ता–केन्द्र और सर्वाधिक सम्मानित शैतान–''शक्ति'' का ध्वंस हो जाता है । इससे तथाकथित नैतिक तथा सम्मानित स्वार्थ भी न हो जाता है । अन्यथा, स्वार्थ हमेशा ही अपना रूप बदलता है, परिमार्जित होता है किन्तु कभी भी समाप्त नहीं होता । यह अन्तहीन परिमार्जन ही अन्तहीन दुःख है जो और भी कष्ट एवं निराशा को जन्म देता है । संवेदनशीलता द्वारा विस्फोटक प्रश्न पूछने से दुःखों का अन्त हो जाता है । और तब करूणा और समझदारी का उदय होता है जिसे अवधारणाएँ एवं निष्कष कभी भी समझ नहीं सकते ।

हमारा मन छिछला और खोखला है जो हमेशा ही सुरक्षा चाहता है, किन्तु तथ्य यह है कि यह चाहने वाला ही भ्रम है, जो केवल भय उत्पन्न करता है । यहाँ या यहाँ के बाद, आकाश के अतिरिक्त कुछ भी सुरक्षित एवं स्थायी नहीं है । संवेदनशील प्रश्नों द्वारा और श्रवण द्वारा ही मन निर्मित कारागारों का ध्वंस हो सकता है और तभी जीवन का अस्तित्व हो सकता है । मन दुःख उत्पन्न करता है और मन से मुक्ति की अवस्था है प्रेम ।

लक्ष्य, लोभ, ईश्वर और तुष्टीकरण के बिना रहने का साहस ही सरलता है। एक सरल व्यक्ति वर्तमान की ऊर्जा में होता है । वह कोई व्यक्तित्व नहीं जो सरलता का दिखावा करता है । विनम्रता मद का विरोधी नहीं बल्कि मद का अभाव है । विनम्रता समझदारी की सहजावस्था है किन्तु मद को हमेशा ही परिमार्जन चाहिए ताकि उसे प्रस्तुत किया जा सके । संवेदनशीलता सरलता और विनम्रता है । भावुकता जटिल और मद से पूर्ण है। संवेदनशीलता स्थिरत्व है । भावुकता उत्तेजना है ।

।। जय संवेदनशीलता ।।